ह्युमानिस्ट मुवमेन्ट

सार्थक कार्यो के 12 सिद्धांत

आचरण के नियम ः यह 12 नियम जो सार्थक कार्यो के सिद्धांत से जाने जाते है उसमे जीवन के आश्चर्यजनक रहस्य छीपे है।यह नियमो को जीवन मे अपनानेसे एक्यभाव महसूस होगा और उल्लंघन करने से मनोवेदना होती है। आप स्वयं इसे आजमाके देखीये।

– सिलो द्वारा "विश्व का मानवीयकरण" से

1. अनुरूपता का सिद्धांत ः उत्क्रांति के खीलाफ जाना अपने आपके विरूध्ध जाना है।

2. कार्य और प्रतिक्रिया का सिद्धांत ः जब आप किसी चीज को अंत की ओर धकेलेगो, तो आप विरोधाभास का निर्माण करोगे।

3. समय पे होने वाले कार्य के सिद्धांत ः प्रचंड ताकत का विरोध मत करो, उसके क्षीण होने का इंतजार किजीये, फिर दृढता से आगे बढीये।

4. तुलनात्म संबंध के सिद्धांत ः जीवन के हर पहलु साथ मे चलते है वह अच्छा होता है, न की अलग अलग।

5. स्वीकृति का सिद्धांत ः अगर रात और दिन, गर्मी और सरदी आपके लिए बराबर है, तो आपने विरोधाभास पे काबु पा लिया है।

6. प्रसन्नता का सिद्धांत ः अगर आप सुख की कामना करते हो, आप अपने आपको पीड़ा से बांध देते हो। परंतु जब तक आप खुद के स्वास्थय को हानी नहीं पहोचाते तब तक उपस्थित मौके से बीना बीना हिचकिचाहट आनंद ले सकते हो।

7. तत्कालिन कार्य का सिद्धांत ः अगर आप किसी निश्चित परिणाम की इच्छाकर लेते हो, तो

अपने आप को बांध लेते हो। परंतु आप जो भी कार्य करते हो, उसी को पूर्ण मान लेते हो तो खुद को मुक्त पाओगे।

8. समजदारी के कार्य का सिद्धांत ः जब आप अपनी समस्याओंको सुलजाने बजाय उसके मूल को समजते हो तो उसे नाबुद कर देते हो।

9. मुक्ति का सिद्धांत ः जब आप दूसरे को हानी पहोचाते हो, आप बंधनमय हो जाते हो पर आप किसी को हानी नहीं पहोचाते हो तो आपकी इच्छानुसार कुछ भी करने के लिये मुक्त हो।

10. बन्धुत्व (सहकार्य) का सिद्धांत ः आप खुद के लिये दूसरो से जैसे व्यवहार की अपेक्षा रखते है, वैसा व्यवहार उनके साथ करने से आप बंधनमुक्त हो जाते हो।

11. विरोधाभास की अस्वीकृति का सिद्धांत ः इससे कुछ फर्क नही पड़ता की संजोगो ने आपको कौनसी परिस्थिति मे रखा है। जरूरी है यह समजना की आपने उन संजोगो को नही चुना है।

12. संचित कार्य के सिद्धांत ः विरोधाभासी और एक्यभाव वाले कार्य आप से संचित होते है। अगर आप आंतरिक एक्य वाले कार्यो का पुनरावर्तन करते हो तो कुछ भी आपको चलित नहीं कर पायेगा।